Glimpse of Mahaveer Jayanti

महावीर स्वामी ने अहिंसा को सबसे उच्चतम नैतिक गुण बताया

भारत एकता टाइम्स/वाराणसी

भगवान महावीर वर्तमान अवसर्पिणी काल की चौबीसी के अंतिम तीर्थंकर थे और हिंसा, पशुबलि, जात-पात का भेद-भाव जिस युग में बढ़ गया, उसी युग में भगवान महावीर का जन्म हुआ। उन्होंने दुनिया को सत्य,अहिंसा का पाठ पढ़ाया। तीर्थंकर महावीर स्वामी ने अहिंसा को सबसे उच्चतम नैतिक गुण बताया। सम्पूणानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के योग साधना केंद्र में श्रवण विद्या संकाय के तत्वोंधान में आयोजित महावीर जयंती मनाया गया।भारतीय ज्ञान परम्परा और भगवान महावीर के विषय पर अपना प्रकाश डालते मुख्य अतिथि के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के जैन दर्शन विभागाध्यक्ष प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि जैन ग्रंथों और धार्मिक लिपियों के अनुसार, भगवान महावीर का जन्म चैत्र माह (हिंदू कैलेंडर) के शुक्ल पक्ष की 13 तारीख को बिहार के कुंडलग्राम (अब कुंडलपुर) में हुआ था, जो पटना से कुछ किलोमीटर दूर है। उस समय, वैशाली को राज्य की राजधानी माना जाता था। हालाँकि, महावीर के जन्म का वर्ष विवादित है। श्वेतांबर जैन के अनुसार, महावीर का जन्म 599 ईसा पूर्व में हुआ था, जबकि दिगंबर जैन 615 ईसा पूर्व को उनका जन्म वर्ष मानते हैं।श्वेतांबर समुदाय की मान्यताओं के अनुसार, महावीर की माँ ने 14 स्वप्न देखे थे, जिनकी व्याख्या बाद में ज्योतिषियों ने की, जिनमें से सभी ने कहा कि महावीर या तो सम्राट बनेंगे या ऋषि (तीर्थंकर)। जब महावीर 30 वर्ष के हुए, तो उन्होंने सत्य की खोज में अपना सिंहासन और परिवार छोड़ दिया। वे 12 वर्षों तक एक तपस्वी के रूप में निर्वासन में रहे। इस दौरान, उन्होंने अहिंसा का प्रचार किया और सभी के साथ सम्मान से पेश आए। संगोष्ठी के कार्यवाहक अध्यक्ष तुलनात्मक धर्म दर्शन के विभागाध्यक्ष प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल उद्देश्य आचरणवान बनाता है। वैदिक मंगलाचरण छात्र सोनू तिवारी, पौराणिक मंगलाचरण अतिथि अध्यापक डॉ. लेखमणि त्रिपाठी एवं प्राकृत मंगलाचरण डॉ. कमलेश कुमार जैन ने किया ।

काशी विद्यापीठ : छात्रों ने सीखा लू से बचाव के उपाय

वाराणसी। अर्थशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में प्रदेश में लू-प्रकोप एवं राहत के लिए हीट-वेव प्रबंधन कार्यक्रम के तहत बुधवार को लू से बचाव एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने नाट्य प्रदर्शन के माध्यम से लू लगने के कारण तथा उपचार पर प्रभावपूर्ण प्रस्तुति की। कार्यक्रम संयोजक एवं विभागाध्यक्ष प्रो. अंकिता गुप्ता ने लू के प्रकोप से बचने के लिए छात्रों को सतर्क करते हुए विभिन्न उपचार बताया। धन्यवाद ज्ञापन समन्वयक डॉ. गंगाधर ने किया। इस अवसर पर कार्यक्रम समन्वयक डॉ. ऊर्जस्विता सिंह, प्रो. राजेश पाल, प्रो. राजीव कुमार, प्रो. हंसा जैन, डॉ. पारस नाथ मौर्य, डॉ. राकेश कुमार तिवारी, डॉ. पारिजात सौरभ आदि उपस्थित रहे।

तीर्थंकर महावीर स्वामी ने अहिंसा को बताया उच्चतम नैतिक गुणः प्रो. प्रद्युम्न

अमृत प्रभात, वाराणसी (नि.सं.)।

सम्पूणानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के योग साधना केंद्र में बुधवार को श्रवण विद्या संकाय के तत्वोंधान में धूमधाम के साथ महावीर जयंती का आयोजन किया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के जैन दर्शन विभागाध्यक्ष प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि जैन ग्रंथों और धार्मिक लिपियों के अनुसार, भगवान महावीर का जन्म चैत्र माह (हिंदू कैलेंडर) के शुक्ल पक्ष की 13 तारीख को बिहार के कुंडलग्राम (अब कुंडलपुर) में हुआ था, जो पटना से कुछ किलोमीटर दूर है। उस समय, वैशाली को राज्य की राजधानी माना जाता था। हालाँकि, महावीर के जन्म का वर्ष विवादित है। श्वेतांबर जैन के अनुसार, महावीर का जन्म 599 ईसा पूर्व में हुआ था, जबकि दिगंबर जैन 615 ईसा पूर्व को उनका जन्म वर्ष मानते हैं। उनके माता–पिता – राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला ने उनका नाम वर्धमान रखा था। श्वेतांबर समुदाय की मान्यताओं के अनुसार, महावीर की माँ ने 14 स्वप्न देखे थे, जिनकी व्याख्या बाद में ज्योतिषियों ने की, जिनमें से सभी ने कहा कि महावीर या तो सम्राट बनेंगे या ऋषि (तीर्थंकर)। जब महावीर 30 वर्ष के हुए, तो उन्होंने सत्य की खोज में अपना सिंहासन और परिवार छोड़ दिया। वे 12 वर्षों तक एक तपस्वी के रूप में निर्वासन में रहे। इस दौरान, उन्होंने अहिंसा का प्रचार किया और सभी के साथ सम्मान से पेश आए। इंद्रियों को नियंत्रित करने में असाधारण कौशल दिखाने के कारण उन्हें ₹महावीर₹ नाम मिला। यह व्यापक रूप से माना जाता है कि जब महावीर 72 वर्ष के थे, तब उन्हें ज्ञान (निर्वाण) प्राप्त हुआ था।कार्यक्रम का संचालन प्रो. रमेश प्रसाद ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मधुसूदन मिश्र ने किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, प्रो. हरिशंकर पांडे, प्रो. राम पूजन पांडे, प्रो. महेंद्र पांडे,प्रो. शैलेश कुमार मिश्र,प्रो. दिनेश कुमार गर्ग,डॉ. मधुसूदन मिश्र, डॉ. सत्येंद्र कुमार यादव, डॉ. राजेश कुमार श्रीवास्तव, डॉ. श्रवण कुमार, डॉ. सूर्यभान कुमार, डॉ. देवात्मा दुवे, डॉ. बालेश्वर झा, बौद्ध भिक्षु, छात्र कर्मचारी व अध्यापक उपस्थित थे।

सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय ने मनाया धूमधाम से महावीर जयंती

वाराणसी (जनवार्ता)। सम्पूणार्नंद संस्कृत विश्वविद्यालय के योग साधना केंद्र में श्रवण विद्या संकाय के तत्वोंधान में बुधवार को आयोजित महावीर जयंती काफी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें भारतीय ज्ञान परम्परा और भगवान महावीर के विषय पर अपना प्रकाश डालते मुख्य अतिथि बीएचयू के जैन दर्शन विभागाध्यक्ष प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि जैन ग्रंथों और धार्मिक लिपियों के अनुसार, भगवान महावीर का जन्म चैत्र माह (हिंदू कैलेंडर) के शुक्ल पक्ष की 13 तारीख को बिहार के कुंडलग्राम (अब कुंडलपुर) में हुआ था। उस समय, वैशाली को राज्य की राजधानी माना जाता था। संगोष्ठी के कार्यवाहक अध्यक्ष तुलनात्मक धर्म दर्शन के विभागाध्यक्ष प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल उद्देश्य आचरणवान बनाता है। भगवान महावीर ने ज्ञान-दर्शन चरित्र की बात कही है। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंगलाचरण, पौराणिक मंगलाचरण अतिथि अध्यापक डॉ. लेखमणि त्रिपाठी एवं प्राकृत मंगलाचरण डॉ. कमलेश कुमार जैन ने किया। जिसके बाद अतिथियों ने दीप प्रज्वलन एवं भगवान महावीर व माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण किया। जहाँ अतिथियों को माल्यार्पण एवं अंग वस्त्र भेंट कर उन्हें सम्मानित करते हुए स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. रमेश प्रसाद,स्वागत प्रो. सुधाकर मिश्र और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मधुसूदन मिश्र ने दिया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से किया गया। जयंती में मुख्य रूप से प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, प्रो. हरिशंकर पाण्डेय, प्रो. राम पूजन पाण्डेय, प्रो. महेंद्र पाण्डेय,प्रो. शैलेश कुमार मिश्र,प्रो. दिनेश कुमार गर्ग,डॉ. मधुसूदन मिश्र, डॉ. सत्येंद्र कुमार यादव, डॉ. राजेश कुमार श्रीवास्तव, डॉ. श्रवण कुमार, डॉ. सूर्यभान कुमार, डॉ. देवात्मा दुवे, डॉ. बालेश्वर झा, बौद्ध भिक्षु, छात्र कर्मचारी व अध्यापक शामिल रहे।

महावीर जयंती कार्यक्रम में भगवान की आरती करते लोग ● जागरण

तीर्थंकर महावीर स्वामी ने दिया समत्व का संदेश

जासं, वाराणसी : तीर्थंकर महावीर स्वामी ने मानवता को सत्य, करुणा और समत्व का संदेश दिया। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के योग साधना केंद्र के संवाद कक्ष में बुधवार को आयोजित 'भारतीय ज्ञान परंपरा और भगवान महावीर' विषयक संगोष्ठी में ये बातें बतौर अतिथि, जैन दर्शन, बीएचयू के अध्यक्ष प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह ने कही। श्रवण विद्या संकाय के तत्वावधान में आयोजित भगवान महावीर स्वामी की जयंती समारोह में प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को आचरणवान बनाना है। स्वागत प्रो. सुधाकर मिश्र, संचालन प्रो. रमेश प्रसाद व धन्यवाद ज्ञापन डा. मधुसूदन मिश्र ने किया।